ईश वन्दना

ए मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हो हमारे करम।
नेकी पर चले और बदी से टलें, ताकि हँसते हुए निकले दम।

ये अँधेरा घना छा रहा, तेरा इंसान घबरा रहा।
हो रहा बेखबर, कुछ न आता नजर, सुख का सूरज छिपा जा रहा।
है तेरी रोशनी में जो दम, तो अमावस को करदे पूनम।।
नेकी पर चलें और बदी से टलें ताकि हंसते हुए निकले दम ...

जब जुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थामना
वो बुराई करे, हम भलाई भरें, नहीं बदले की हो भावना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम, और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चलें और बदी से टलें, ताकि हंसते हुए निकले दम ...

बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों हैं इसमें कमी
पर तू जो खड़ा है दयालू बड़ा, तेरी किरपा से धरती थमी
दिया तूने हमें जब जनम, तू ही झेलेगा हम सबके गम
नेकी पर चलें और बदी से टलें ताकि हंसते हुए निकले दम ...

Song title: Ae Malik Tere Bande Hum Movie: Do Aankhen Barah Haath   Singer(s): Lata Mangeshkar
Music: Vasant Desai   Lyrics: Bharat Vyas
Star Cast: V. Shantaram, Sandhya   Year: 1957
Lyrics of *Ae Malik Tere Bande Hum* in Hindi from movie *Do Aankhen Barah Haath*:

प्रार्थना

तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।

तुम्ही हो साथी तुम्ही सहारे।
कोई न अपना सिवा तुम्हारे।

तुम्ही हो नैया तुम्ही खेवैया।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।

जो खिल सके हैं वो फूल हम हैं।
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।

दया की दृष्टि सदा ही रखना।
तुम्ही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।

ईश वन्दना

तू ही राम है, तू रहीम है, तू करीम कृष्ण खुदा हुआ।
तू ही वाहे गुरु तू यीशू मसीह हर नाम में तू समा रहा। ।

तेरी जात पाक कुरान में, तेरा दरस वेद पुराण में।
गुरु ग्रन्थजी के बखान में, तू प्रकाश अपना दिखा रहा।
तू ही राम ह..।

अरदास है कहीं कीरतन, कहीं रामधुन कहीं आवहन।
विधि भेद का यह है सब रचन, तेरा भक्त तुझको बुला रहा।
तू ही राम है..।

प्रार्थना

दया कर दान विद्या का हमें परमात्मा देना,
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।

हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ।
अँधेरे दिल में आकर के, परम ज्योति जगा देना।
दया कर..।

हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा, व सेवक चर बना देना।
दया कर..।

बहादो प्रेम की गंगा दिलो में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिलजुल के प्रभो रहना सिखा देना।

वतन के वास्ते जीना वतन के वास्ते मरना
वतन पर जाँ फिदा करना, प्रभो हमको सिख देना।
दया कर..।

❀प्रार्थना❀

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल पल छिन्न छिन्न, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।

चाहे काँटो पे मुझे चलना हो, चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है...।

चाहे बैरी कुल संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है...।

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर चित ना डगमग मेरा हो, रहे ध्याान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है...।

जिव्हा पर तेरा नाम रहे, तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे।
तेरी याद तो आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मिलता है...।

प्रार्थना

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जाएँ।
पर सेवा पर उपकार में हम, जग जीवन सफल बना जाएँ।।

हम दीन दुखी निबलों विकलों के सेवक बन संताप हरे।
जो हैं अटके भूले भटके, उनको तारें खुद तर जाएँ।।

छल दम्भ द्वेष पाखण्ड झूठ, अन्याय से निशि दिन दूर रहे।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधारस बरसाएँ।।

निज आन मान मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश जाति में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जाएँ।।

प्रार्थना

उतरो तम पथ पर ज्योति,
चरण उतरो उतरो उतरो।

पद चिह्न बने नखतावलियाँ,
झूमे दिशि दिशि दीपावलियाँ।
जन शुभ युग मंगल किरणों की,
छवि मांग रहा तुमसे कण कण।
उतरो उतरो उतरो......................।

अवनी अम्बर के अधर मिले,
मानव संसृति के सुमन खिले।
जन मानस की लहरी करले,
पावन ज्योत्स्ना का पुण्य वरण।
उतरो उतरो उतरो......................।

तुम छिपे यहीं यमुना तट पर,
मोहन भरते मुरली का स्वर।
दो नवल रश्मि जग को जिससे,
अणु अणु आलोकित हो क्षण क्षण।
उतरो उतरो उतरो......................।

ईश वन्दना

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोइ भूल हो ना –2

दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनीं दे
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे, भली जिन्दगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले कि हो ना
हम चलें नेक ....

हम ना सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों के बाटें सभी को, सबका जीवन हीं बन जाये मधुबन
अपनी करुणा का जल तू बहाके, कर दे पावन हर एक मन का कोना
इतनी शक्ति हमें देना दाता.......................

इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे, हमसे भूलकर भी कोइ भूल हो ना

तर्ज–: चिरमी रा डाळा च्यार

❀सरस्वती वन्दना❀

थानें मनाऊँ माँ शारदे, थानें मनाऊँ माँ शारदे।
ओ म्हारा घट रा पट दो खोल,
जय–जय शारद माँ।।
पूजा हिलमिल म्हें करां, पूजा हिलमिल म्हें करां,
ओ थारी घणी रे करां मनवार,
जय–जय शारद माँ।।
थारी उतारां माँ आरती, थारी उतारां माँ आरती
ओ थारें भेंट करुं फूलमाळ,
जय जय शारद माँ।।
थांरी किरपा सूं सब हुवे माँ,
थांरी किरपा सूं सब हुवे माँ,
ओ म्हारों बेड़ो रे लगा दीज्यो पार,
जय–जय शारद माँ।।
अज्ञानी ने ज्ञान दो माँ, अज्ञानी ने ज्ञान दो माँ
ओ माँ मूरख सूं मिनख बणाय,
जय–जय शारद माँ।।

❀सरस्वती वन्दना❀

माँ सरस्वती तेरे चरणों में, हम शीश झुकाने आयें है।
दर्शन की भिक्षा लेने को, दो नयन कटोरे लाए हैं।।

अज्ञान अंधेरा दूर करो और, ज्ञान का दीप जला देना।
हम ज्ञान की शिक्षा लेने को, माँ द्वार तिहारे आए हैं।।

हम अज्ञानी बालक तेरे, अज्ञान दोष को दूर करो।
बहती सरिता विद्या की, हम उसमें नहाने आए हैं।।

हम साँझ सवेरे गुण गाते, माँ भक्ति की ज्योति जला देना।।
क्या भेंट करु उपहार नहीं, हम हाथ पसारे आए हैं।।

माँ सरस्वती तेरे चरणों में, हम शीश झुकाने आयें है।
दर्शन की भिक्षा लेने को, दो नयन कटोरे लाए हैं।।

❀सरस्वती वन्दना❀

माँ सरस्वती वरदान दो,
मुझको नवल उत्थान दो।
यह विश्व ही परिवार हो,
सब के लिए सम प्यार हो।
आदर्श, लक्ष्य महान हो।
माँ सरस्वती..........................।
मन, बुद्धि, हृदय पवित्र हो,
मेरा महान चरित्र हो।
विद्या विनय वरदान दो।
माँ सरस्वती.............................।
माँ शारदे हँसासिनी,
वागीश वीणा वादिनी।
मुझको अगम स्वर ज्ञान दो।
माँ सरस्वती, वरदान दो। मुझको नवल उत्थान दो। उत्थान दो। उत्थान दो...।

❁सरस्वती वन्दना❁

हँस वाहिनी ऐसा वर दो,
अवगुण हरकर सद्‌गुण भरदो।

पढ लिखकर माता हम, विद्वान बन जायेंगे
भारत से अनपढता को दूर भगायेंगे।
दुखियों की सेवा दिल में भर दो।
अवगुण हरकर सद्‌गुण भरदो।
हँस वाहिनी...................................... ।

झूठ और पाप के हम पास नहीं जायेंगे
अन्यायी के आगे हम शीश ना झुकायेंगे।
दुशमन को सज्जन दिल से करदो
अवगुण हरकर सद्‌गुण भरदो।
हँस वाहिनी...................................... ।

भाषा का विवाद मैया देश से मिटायेंगे।
हम सब एक हैं यह भावना जगायेंगे।
वाणी में मैया ओजस भर दो।
अवगुण हरकर सद्‌गुण भर दो।
हँस वाहिनी...................................... ।

❀सरस्वती वन्दना❀

जयति जय जय माँ सरस्वती, जयति पुस्तक धारणी।
जयति पद्मासना माता, जयति शुभ वर दायिनी।
जगत का कल्याण कर माँ, तुम हो विद्या दायिनी।
जयति जय जय माँ ....।

कमल आसन छोड़ दे माँ, देख जग की दुर्दशा।
शान्ति की सरिता बहादे, फिर से जग में जननी।
जयति जय जय माँ ....।

तर्ज:ए मेरे दिले नादान

❁सरस्वती वन्दना❁

हे हँस वाहिनी माँ, हम शरण में आये हैं।
घर ज्योतिर्मय कर दे, अभिलाषा लाए हैं।

तुम वीणा पाणि हो, विद्या और वाणी हो।
विज्ञान की हो जननी, जन जन कल्याणी हो।
तव चरणों में मैया, हम शीश झुकाए हैं।

तेरे कर में पोथी है, तू ज्ञान की ज्योति है।
विद्वान बना देती, जिस पर खुश होती है।
जब कालिदास जैसे, महा कवि बन पाए हैं।

❀सरस्वती वन्दना❀

हे स्वर की देवी माँ, वाणी में मधुरता दो।
हम गीत सुनाते हैं, संगीत की शिक्षा दो।

अज्ञान ग्रसित होकर, क्या गीत सुनायें हम।
टूटे हुए शब्दों से, क्या स्वर को सुनाएं हम।
दो ज्ञान राग माँ तुम, वाणी में मधुरता दो।

सरगम का ज्ञान नहीं, शब्दों में सार नहीं।
तुम्हें आज सुनाने को, मेरी मैया कुछ भी नहीं।
संगीत समन्दर से, स्वर ताल हमें दे दो।

भक्ति ना शक्ति है, शब्दों का ज्ञान नहीं।
तुम्हे आज सुनाने को, मेरी मैया कुछ भी नहीं।
गीतों के खजाने से, एक गीत हमें दे दो।

❁ प्रेरणा गीत ❁

किसी के काम जो आए उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए उसे इंसान कहते हैं।

(1) कभी धनवान है कितना कभी इंसान निर्धन हैं।
कभी दुःख है कभी सुख है इसी का नाम जीवन हैं।
जो मुश्किल से न घबराए उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द ....

(2) ये दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस–हँस के जीता है कोई जीता है रो–रोकर।
जो गिरकर फिर संभल जाए उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द ....

(3) अगर गलती रुलाती है तो राहें भी दिखाती हैं।
मनुज गलती का पुतला है जो अक्सर हो ही जाती है।
जो करले ठीक गलती को उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द ....

(4) यों भरने को तो दुनिया में पशु भी पेट भरते हैं।
लिए इंसान का दिल जो वे ही परमार्थ करते हैं।
मनुज जो बांटकर खाए उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द ....

❀ प्रेरणा गीत ❀

मैं तुमको विश्वास दूं, तुम मुझको विश्वास दो
शंकाओं के सागर हम तर जाएंगे
मरुधरा को मिलकर स्वर्ग बनाएँगे, मैं तुमको ....

(1) प्रेम बिना यह जीवन तो अनजाना है,
सब अपने हैं कौन यहाँ बेगाना हैं।
हर पल अपना अर्थवान बन जाएगा,
बस थोड़ा सा मन में प्यार जगाना हैं।
इस जीवन को साज दो, मौन नहीं आवाज दो।
पाषाणों में मीठी प्यास जगाएंगे, मरूधरा को ....

(2) अलगावों से आग सुलगने लगती है,
उपवन की हर शाख झुलसने लगती है।
हर आंगन में सिर्फ सिसकियाँ उठती हैं,
सम्बन्धों की साँस उखड़ने लगती है।
द्वेष भाव को त्याग दो, बस सबको अनुराग दो।
सन्नाटों में हम सरगम बन जाएंगे, मरूधरा को ....

(3) ढूंढ़ सको तो इस माटी में सोना है,
हिम्मत का हथियार नहीं बस खोना है।
मुस्करा दो तो हर मौसम मस्ताना है,
बीत गया जो समय उसे क्या रोना हैं।
लो हाथों में हाथ लो, जन–जन को विश्वास दो।
इस धरती पर सोया प्यार जगाएंगे, मरूधरा को ....

❁ प्रेरणा गीत ❁

जीवन में कुछ करना है तो, मन को मारे मत बैठो ।
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो ॥

चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है ।
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल होता है
पाँव मिले हैं चलने के खातिर, पाँव पसारे मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो ॥

तेज दौड़ने वाला खरहा, दो पाँव चलकर हार गया ।
धीरे-धीरे चलता कछुआ, देखो बाजी मार गया
चलो कदम से कदम मिलाकर, दूर किनारे मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो ॥

धरती चलती तारे चलते, चाँद रात भर चलता है।
किरणों का उपहार बांटने, सूरज रोज निकलता है
हवा चले तो महक बिखरे, तुम भी ठाले मत बैठो
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो ॥

जीवन में कुछ करना है तो, मन को मारे मत बैठो।
आगे-आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो ॥

❀ प्रेरणा गीत ❀

होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन।
ओहो मन में है विश्वास पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन ॥

हम चलेंगे साथ साथ, डाल हाथों में हाथ
हम चलेंगे, साथ साथ एक दिन।
ओहो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम चलेंगे साथ साथ एक दिन ॥

नहीं डर किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन ।
ओहो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
नहीं डर किसी का आज के दिन ॥

होगी शान्ति चारों ओर, होगी शान्ति चारों ओर
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन।
ओहो मन में है विश्वास पूरा है विश्वास
होगी शांति चारों ओर एक दिन ॥

होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब एक दिन।
ओहो मन में है विश्वास पूरा है विश्वास,
हम होंगे कामयाब एक दिन ॥

❁हिन्द देश के निवासी❁

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक है,
रंग रूप वेश भाषा चाहे अनेक हैं।

(1) बेला गुलाब जूही चम्पा–चमेली,
प्यारे–प्यारे फूल गूँथे माला में एक है।
हिन्द देश के निवासी............................

(2) कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी,
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।
हिन्द देश के निवासी............................

(3) गंगा–जमना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी,
जाके मिलगई सागर में हुई सब एक है।
हिन्द देश के निवासी............................

❀चंदन है इस देश की माटी❀

चंदन है इस देश की माटी तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा बच्चा राम है।

हर शरीर मंदिर सा पावन, हर मानव उपकारी है।
जहाँ सिंह बन गये खिलौने, गाय जहाँ माँ प्यारी है।
जहाँ सवेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है ॥१॥

जहाँ कर्म से भाग्य बदलता, श्रम निष्ठा कल्याणी है।
त्याग और तप की गाथाएँ, गाती कवि की वाणी है।
ज्ञान जहाँ का गंगाजल सा, निर्मल है अविराम है॥२॥

जिसके सैनिक समरभूमि मे गाया करते गीता है।
जहाँ खेत में हल के नीचे खेला करती सीता है।
जीवन का आदर्श जहाँ पर परमेश्वर का धाम है॥३॥

❀ऐ मेरे वतन के लोगों ❀

Song Title: Aye Mere Watan Ke Logo   Singer: Lata Mangeshkar   Lyrics: Kavi Pradeep
Music: C. Ramchandra   Year: 1963

ऐ मेरे वतन के लोगों... तुम खूब लगा लो नारा
ये शुभ दिन है हम सब का लहरा लो तिरंगा प्यारा
पर मत भूलो सीमा पर वीरों ने है प्राण गँवाए
कुछ याद उन्हें भी कर लो,•2 जो लौट के घर न आए,•2

ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुरबानी,•2
तुम भूल न जाओ उनको इस लिये सुनो ये कहानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुरबानी

जब घायल हुआ हिमालय खतरे में पड़ी आजादी
जब तक थी साँस लड़े वो,•2 फिर अपनी लाश बिछा दी
संगीन पे धर कर माथा सो गये अमर बलिदानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुरबानी

जब देश में थी दीवाली, वो खेल रहे थे होली
जब हम बैठे थे घरों में, वो झेल रहे थे गोली
थे धन्य जवान वो अपने थी धन्य वो उनकी जवानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुरबानी

कोई सिख कोई जाट मराठा,•2 कोई गुरखा कोई मदरासी,•2
सरहद पर मरने वाला,•2 हर वीर था भारतवासी
जो खून गिरा पर्वत पर वो खून था हिंदुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुरबानी

थी खून से लथ–पथ काया फिर भी बन्दूक उठाके
दस–दस को एक ने मारा फिर गिर गये होश गँवा के
ख्जब अन्त–समय आया तो,•2 कह गए के अब मरते हैं
खुश रहना देश के प्यारों,•2 अब हम तो सफर करते हैं,•2
क्या लोग थे वो दीवाने क्या लोग थे वो अभिमानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुरबानी
तुम भूल न जाओ उनको इस लिये कही ये कहानी
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुरबानी
जय हिन्द जय हिन्द जय हिन्द की सेना,•2 जय हिन्द जय हिन्द जय हिन्द

❀जहाँ डाल–डाल पर❀

गीतकार : राजेंद्र कृष्ण, गायक : मोहम्मद रफी, संगीतकार : हंसराज बहल, चित्रपट : सिकंदर-ए-आजम (१९६५) / Lyricist : Rajendra Krishna, Singer : Mohammad Rafi, Music Director : Hansraj Behl, Movie : Sikandar-E-Azam (1965) :

जहाँ डाल–डाल पर सोने की चिड़ियां करती हैं बसेरा , वो भारत देश हैं मेरा
जहाँ सत्य, अहिंसा और धर्म का पग–पग लगता डेरा, वो भारत देश हैं मेरा
जय भारती, जय भारती, जय भारती

ये धरती वो जहाँ ऋषि मुनि जपते प्रभु नाम की माला
जहाँ हर बालक इक मोहन हैं और राधा इक इक बाला
जहाँ सूरज सबसे पहले आ कर डाले अपना फेरा
वो भारत देश हैं मेरा ...

जहाँ गंगा, जमुना, कृष्ण और कावेरी बहती जाये
जहाँ उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम को अमृत पिलवाये
कहीं ये तो फल और फूल उगाये, केसर कहीं बिखेरा
वो भारत देश हैं मेरा ...

अलबेलों की इस धरती के त्योहार भी हैं अलबेले
कहीं दीवाली की जगमग हैं, होली के कहीं मेले
यहाँ रागरंग और हँसी खुशी का चारों ओर हैं घेरा
वो भारत देश हैं मेरा ...

जहाँ आसमां से बातें करते मंदिर और शिवाले
किसी नगर में किसी द्वार पर कोई न ताला डाले
और प्रेम की बंसी जहाँ बजाता आये शाम सवेरा
वो भारत देश हैं मेरा ...

❁आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं ❁

Movie : Jaagriti, **Singer :** Pradeep, Music Director : Hemant Kumar, **Lyricist :** Pradeep,
Actors : Abhi Bhattacharya, **Year :** 1954

आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झाँकी हिंदुस्तान की, इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम ...... वंदे मातरम ......

ये है अपना राजपूताना नाज इसे तलवारों पे, इसने सारा जीवन काटा बरछी तीर कटारों पे
ये प्रताप का वतन पला है आजादी के नारों पे, कूद पड़ी थी यहाँ हजारों पद्‌मिनियाँ अंगारों पे
बोल रही है कण कण से कुरबानी राजस्थान की, इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम ...... वंदे मातरम ......

देखो मुल्क मराठों का ये यहाँ शिवाजी डोला था, मुगलों की ताकत को जिसने तलवारों पे तोला था
हर पावत पे आग लगी थी हर पत्थर एक शोला था, बोली हर–हर महादेव की बच्चा–बच्चा बोला था
यहाँ शिवाजी ने रखी थी लाज हमारी शान की, इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम ...... वंदे मातरम ......

जलियाँ वाला बाग ये देखो यहाँ चली थी गोलियाँ, ये मत पूछो किसने खेली यहाँ खून की होलियाँ
एक तरफ बंदूकें दन दन एक तरफ थी टोलियाँ, मरनेवाले बोल रहे थे इनकलाब की बोलियाँ
यहाँ लगा दी बहनों ने भी बाजी अपनी जान की, इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम ...... वंदे मातरम ......

ये देखो बंगाल यहाँ का हर चप्पा हरियाला है, यहाँ का बच्चा–बच्चा अपने देश पे मरनेवाला है ढाला है इसको बिजली ने भूचालों ने पाला है, मुट्ठी में तूफान बंधा है और प्राण में ज्वाला है जन्मभूमि है यही हमारे वीर सुभाष महान की, इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की
वंदे मातरम ...... वंदे मातरम ......

❀ मेरे देश की धरती सोना उगले ❀

फिल्म : उपकार संगीतकार : कल्याणजी – आनंदजी गायक : महेंद्र कपूर गीतकार: इंदीवर

मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती
मेरे देश की धरती

बैलों के गले में जब घुँघरू जीवन का राग सुनाते हैं
गम कोस दूर हो जाता है खुशियों के कंवल मुस्काते हैं
सुन के रहट की आवाजें यूँ लगे कहीं शहनाई बजे
आते ही मस्त बहारों के दुल्हन की तरह हर खेत सजे

मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती
मेरे देश की धरती

जब चलते हैं इस धरती पे हल ममता अँगड़ाइयाँ लेती है
क्यों ना पूजें इस माटी को जो जीवन का सुख देती है
इस धरती पे जिसने जन्म लिया उसने ही पाया प्यार तेरा
यहाँ अपना पराया कोई नहीं हैं सब पे है माँ उपकार तेरा

मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती
मेरे देश की धरती

ये बाग हैं गौतम नानक का खिलते हैं अमन के फूल यहाँ
गांधी, सुभाष, टैगोर, तिलक ऐसे हैं चमन के फूल यहाँ
रंग हरा हरिसिंह नलवे से रंग लाल है लाल बहादुर से
रंग बना बसंती भगतसिंह से रंग अमन का वीर जवाहर से

मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती
मेरे देश की धरती

❀ये देश है वीर जवानों का❀

फिल्म : नया दौर संगीतकार : ओ.पी. नैयर गायक : मोहम्मद रफी रचनाकार : साहिर लुधियानवी

ये देश है वीर जवानों का, अलबेलों का मस्तानों का
इस देश का यारों क्या कहना, ये देश है दुनिया का गहना

यहाँ चौड़ी छाती वीरों की, यहाँ भोली शक्लें हीरों की
यहाँ गाते हैं राँझे मस्ती में, मचती में धूमें बस्ती में

पेड़ों पे बहारें झूलों की, राहों में कतारें फूलों की
यहाँ हँसता है सावन बालों में, खिलती हैं कलियाँ गालों में

कहीं दंगल शोख जवानों के, कहीं करतब तीर कमानों के
यहाँ नित नित मेले सजते हैं, नित ढोल और ताशे बजते हैं

दिलबर के लिये दिलदार हैं हम, दुश्मन के लिये तलवार हैं हम
मैदां में अगर हम डट जाएं, मुश्किल है कि पीछे हट जाएं

❀नन्हा मुन्ना राही हूँ❀

फिल्म : सन ऑफ इंडिया संगीतकार : नौशाद गायक : शांति माथुर रचनाकार : शकील बदायूँनी

नन्हा मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ
बोलो मेरे संग, जय हिन्द, जय हिन्द, जय हिन्द

रस्ते पे चलूंगा न डर–डर के चाहे मुझे जीना पड़े मर–मर के
मंजिल से पहले ना लूंगा कहीं दम आगे ही आगे बढाऊँगा कदम
दाहिने बाएं दाहिने बाएं, थम! नन्हा मुन्ना राही हूँ...

धूप में पसीना बहाऊँगा जहाँ हरे–भरे खेत लहराएगें वहाँ
धरती पे फाके न पाएगें जन्म आगे ही आगे ...

नया है जमाना मेरी नई है डगर देश को बनाऊँगा मशीनों का नगर
भारत किसी से न रहेगा कम आगे ही आगे ...

बड़ा हो के देश का सितारा बनूंगा दुनिया की आँखो का तारा बनूंगा
रखूँगा ऊँचा तिरंगा हरदम आगे ही आगे ...

शांति की नगरी है मेरा ये वतन सबको सिखाऊँगा प्यार का चलन
दुनिया में गिरने न दूँगा कहीं बम आगे ही आगे ...

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिए कोय ।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय ॥

रैन गवाँई सोय के, दिवसु गँवाइया खाय ।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय ॥

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि–गढ़ि काढ़ै खोट ।
अंतर हाथ सँभारि दे, बाहर बाहे चोट ॥

जो पहले कीजै जतन, सो पीछे फलदाय ।
आग लगै खोदे कुआँ, कैसे आग बुझाय ॥

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर ।
समय पाय तरूवर फले, के तक सींचो नीर ॥

मधुर वचन से जात मिटे, उताम जन अभिमान ।
तनिक सीत जल सौं मिटै, जैसे दूध उफान ॥

समय बड़ा अनमोल है, मत कर यूँ बरबाद ।
कुछ तो ऐसा काम कर, लोग करें तुझे याद ॥

कबीरा खड़ा बाज़ार में, मांगे सबकी खैर ।
ना काहू से दोस्ती, न काहू से बैर ॥

साँच बराबर तप नहीं, झूंठ बराबर पाप ।
जांके हिरदे सांच है, ताके हिरदे आप ॥

सरस्वती के भंडार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खरचे त्यों– त्यों बढ़े, बिन खरचे घट जात ॥

गुरु गोविंद दोनों खड़े, काके लागूं पाँय ।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो मिलाय ॥

लाली मेरे लाल की, जित देखौं तित लाल ।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ॥

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय ।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीन–बंधु सम होय ॥

समय समय का मोल है, समय समय की बात।
कोई समय का दिन बड़ा, कोई समय की रात ॥

रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि ।
जहाँ काम आवै सुई, क्या करै तलवारि ॥

सतगुरु ऐसा चाहिए, जैसे लोटा डोर ।
गला फँसावे आपनौ, लावै नीर झकोर ॥

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय ।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ परि जाय ॥

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि ।
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि ॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ॥

बड़े बड़ाई ना करे, बड़े ना बोले बोल ।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख हमारो मोल ॥

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर ।
वशीकरण इक मंत्र है, तजिए वचन कठोर ॥

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ॥

साँई इतना दीजिए , जामें कुटुंब समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ , साधु न भुखा जाय ॥

तुलसी इस संसार में, भाँति–भाँति के लोग ।
सबसौं हिल–मिल चालिए, नदी–नाव संजोग ॥

बिगरी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय ।
रहिमन फाटै दूध ते, मथे न माखन होय ॥

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय ॥

कथनी थोथी जगत् में, करनी उत्तम सार ।
कह कबीर करनी सबल, उतरै भव जल पार ॥

करे बुराई सुख चहै, कैसे पावे कोय ।
रोपे बिरवा आक का, आम कहाँ ते होय ॥

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर ।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर ॥

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥

मन लोभी मन लालची, मन चंचल मन चोर ।
मन के मते न चालिए, पलक पलक मन ओर ॥

कबीरा ये जग कुछ नहीं, खिन खारा खिन मीठ ।
कालही जो बैठ्या मंडप में, आज मशाने दीठ ॥

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून ।
पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुष, चून ॥

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन ।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछे कौन ॥

समय पाय फल होत है, समय पाय झरी जात ।
सदा रहे नहिं एक सी, का रहीम पछितात ॥

धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय ।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ॥

दोस पराए देखि करि, चला हसन्त हसन्त ।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत ॥

साधू भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं ।
धन का भूखा जी फिरै, सो तो साधू नाहिं ॥

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ॥

माया मुई न मन मुआ, मरी मरी गया सरीर ।
आसा त्रिसना न मुई, यों कही गए दास कबीर ॥

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब ॥

दुर्बल को न सताइए, जा कि मोटी हाय ।
मरे जीव की चाम से, लोहा भस्म हो जाय ॥

चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोई ।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोई ॥

सोना, सज्जन, साधु जन, टूट जुड़ै सौ बार ।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार के, ऐके धका दरार ॥

माटी कहे कुम्हार से, तु क्या रौदें मोय ।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोय ॥

मूंड मुंडाये हरि मिले, सब कोई लेय मुंडाय ।
बार–बार के मुंडते, भेड़ न बैकुण्ठ जाय ॥

नींद निशानी मौत की, उठ कबीरा जाग।
और रसायन छांड़ि के, नाम रसायन लाग ॥

माता पिता बैरी भए, जो न पढ़ाए बाल।
जीवन भर खींचती रहे, अनपढ़ जन की खाल ॥

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं ।
प्रेम गली अति साँकरी, तामें दो न समाहिं ॥

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करै न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय ॥

सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर ।
देखन में छोटे लगैं घाव करैं गम्भीर ॥